रात्रीक्लास 20.9.66

मीठे2 बच्चों को यहॉ मधुबन में रहने से यह भासना आती है कि हम बापदादा के घर में आये हैं या रहे हुये हैं और बच्चों को बाप से विश्व के मालिक बनने का वर्सा मिल रहा है। सुनने रहने से ही भासना आती है कि बाप ही हमको आकर पढ़ा रहे हैं। अपने घर में जाते हैं तो थोड़ा भूल जाते हैं। यहॉ आते हैं साकार के पास। यह भी जानते हैं हम ज्ञान सागर पतित पावन बाप के पास जाते हैं। वैसे इतनी भासना नहीं आवेगी कि कैसे बाप आकर पढ़ाते हैं। अब यहॉ तो बाहर का हंगामा या कोई बाहर का वायुमंडल आदि नहीं है। यहॉ तुमको संगमयुग की पूरी2 भासना आती है। मगर वहॉ नहीं ; क्योंकि घर में तो कोई ना कोई गोरखधंधा होता है। यहॉ रिफ्रेश रहते हैं। अब तुमको काम होना चाहिए ज्ञान की धारणा करना और औरों को जाकर सुनाना। भक्त भगवान को याद करते आते हैं और कहते हैं बाबा आप जब भी आवेंगे तो हम फिर से सुख घनेरे लेंगे। अब तुम जानते हो तुम्हारे वो ही भगवान आये हैं तो सुख घनेरे का पुरुषार्थ चाहिए ना। बाप बाकी अब समझाते हैं कि तुम बाबा से कहो हमें यह सीढ़ी का चित्र दो तो हम इसको घर में रखेंगे और अंधों को रास्ता दिखावेंगे। सीढ़ी का चित्र बाबा छपवा भी लेंगे फिर एक2 बच्चे को घर में टांगने के लिए देंगे। बाप पूछते हैं गांवड़े के बच्चों समझते हो बाप कहते हैं भाई को तो भाई से वर्सा मिल ही नहीं सकता है। रावण आधा कल्प तक दुःख ही दुःख देते रहते हैं। अब मैं कहता हूँ मेरा बनने से तुम विश्व के मालिक बनते हो। अब बाप फिर लेने आया है तुमको विश्व की बादशाही देने के लिए। तो अब तो तुमको विश्व की सारी बादशाही लेने के लिए पत्थर से पारसबुद्धि बनना पड़े ना। इसमें गफलत या सुस्ती वगैरह नहीं करनी है। रावण राज्य में तो है ही दुःख। अब दुःख और सुख का भी खेल है। अब पुरुषार्थ ऐसा करो जो स्वर्ग में तुम तख्तनशीन बन सको। अब रावण से पहले बाप से वर्सा मिलता है। कोई तुम सदा से ही दुःख में ही तो नहीं थे। मगर अब तो तुम दुःख में रहे पड़े हो। राम कोई दुःख नहीं देते हैं। अब (उन) सब बातों में तुमको जाना नहीं है। तुमको पढ़ाने के बाद ही मैं मुक्तिधाम जाकर विश्राम करता हूँ। सबसे बड़ा दुश्मन तो यह रावण ही है। बाबा कहते हैं तुमको तो मुक्तिधाम में जाना है। अब ऊॅच ते ऊॅच बाप आकर ऊॅची ही पढ़ाई पढ़ाते हैं। फिर ऐसे ना हो कि त्रेता में आओ। बाबा फिर भी कहते हैं बच्चे पढ़ाई पढ़ते हो?बच्चों को ज्ञान का मंथन तो बहुत करना चाहिए। बाबा को कहना चाहिए बाबा हमको यह चित्र दो तो हम घर में रखेंगे। यहॉ चित्र तो बहुत रखे हैं और बाबा बच्चों के लिए बनाते ही रहते हैं। यहॉ सब कुछ बच्चों के लिए है ही। बाप को बच्चों को बहुत फिरक रहता है। बड़ा कहावना बड़ा दुःख पावना, छोटे का दुःख दूर। बाप का तो सब कुछ बच्चों के लिए ही होता है। बाप कहते हैं बच्चों मैं तुमको विश्व का मालिक बनाय खुद परमधाम में चला जाता हूँ। अपने को आत्मा समझो और बाप को याद करो ; क्योंकि आत्मा भी इस समय पत्थरबुद्धि है। वो भी अब पतित है और फिर उसको ही सबसे पहले वहॉ राज्य करना है। अब तुम बच्चे गफलत मत करो। वहॉ तो कोई भी रोता ही नहीं है। बाप बच्चों 2 करते रहते हैं और कहते हैं बच्चों तुम 63 जन्मों तक विकारों में गिर रहे हो। अब मैं आकर खुद कहता हूँ कि अब सिर्फ एक जन्म तो पावन बनो। फिर भी मानते नहीं हो। सब अपने धर्म–कर्म से गिर पड़े हैं और सब ही अपने धर्म को जानते हैं। सिर्फ भारतवासी ही सबसे अधिक भ्रष्ट बने हैं। तुम अब बा पके पूरे2 बने हो। तो बाप से पूरा ही वर्सा भी लेना चाहिए ना। विश्व का मालिक बनना चाहिए ना। तुमको बाबा बार2 ही समझाते हैं कि वापस घर जाना है और पुरुषार्थ पूरा कर लो। मगर फिर भी भूल जाते हैं। लोग कहते हैं कि भगाया है। अब बाप भगाते तो नहीं। पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं कर्म करते बाप को याद करो। बाप कहते हैं कर्म करते बाप को याद करो। बच्चों को साक्षात्कार भी बहुत होते थे स्वर्ग के सुखों के। अब फिर तुमको लास्ट में भी सब साक्षात्कार होंगे कि क्या पद पावेंगे सो बच्चों को याद का बहुत पुरुषार्थ तेज करना है। तो ही वहॉ गद्दीनशीन बनेंगे। अच्छा,ओम।